International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 6.924 Volume 10, Issue 03, March 2023
Website- www.aarf.asia, Email : editoraarf@gmail.com

प्रभाकर माचवे के काव्य में आधुनिक भावबोध

डॉ राजेन्द्र गंगाधरराव मालोकर

हिन्दी वभाग प्रमुख

श्री निकेतन आर्ट्स कॉमर्स कालेज, नागपुर (महाराष्ट्र)

सार

क व प्रभाकर माचवे का जन्म 26 दिसंबर 1917 को एक मराठी परिवार में ग्वा लयर में हुआ था। दर्शनशास्त्र में स्नातकोत्तर के बाद उन्होंने 'हिंदी-मराठी निर्गुण संत काव्य' वषय पर आगरा वश्व वद्यालय से शोध पूरा कया। सन १९३६ में प्रगतिशील लेखक संघ के प्रथम अ धवेशन के साथ ही भारतीय साहित्य में प्रगतिवाद का आगमन माना जाता है । इस समय तक प्रगतिवाद की कोई चर्चा साहित्य में नहीं थी । कन्तु युरो पय साहित्य में ऐसी प्रवृत्तियाँ दिखाई पड़ने लगती थी। जो अपेक्षाकृत काफ़ी नहीं थी। ये प्रवृत्तियाँ उलझी हुई संवेदना एवं भाषा की प्रतिकात्मकता से युक्त थी ।

प्रमुख शब्द: प्रभाकर माचवे, काव्य

परिचय

'तार सप्तक' के क व प्रभाकर माचवे का जन्म 26 दिसंबर 1917 को एक मराठी परिवार में ग्वा लयर में हुआ था। दर्शनशास्त्र में स्नातकोत्तर के बाद उन्होंने 'हिंदी-मराठी निर्गुण संत काव्य' वषय पर आगरा वश्व वद्यालय से शोध पूरा कया। देश- वदेश में प्राध्यापन के साथ ही वह संघ लोक सेवा आयोग में वशेष भाषा धकारी और साहित्य अकादेमी के स चव के रूप में कार्यरत रहे। भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शमला में मानद फेलो और भारतीय भाषा परिषद्, कलकत्ता में निदेशक के रूप में भी उनकी संबद्धता रही। बाद में 'चौथा संसार' (इंदौर) के संस्थापक संपादक बने।

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

वह वद्यार्थी जीवन से ही क वताएँ लखने लगे थे। उनकी पहली क वता 1934 में माखनलाल चतुर्वेदी द्वारा संपादित ‘कर्मवीर’ में छपी। 1935 में प्रेमचंद ने ‘हंस’ में उनकी पहली कहानी प्रका शत की। इसी तरह निराला द्वारा 1936 में ‘सुधा’ में उनका पहला लेख छापा। 1937 में उन्होंने जैनेंद्र के दार्शनिक वचारोंवाले निबंधों का संपादन कया जो ‘जैनेंद्र के वचार’ नाम से प्रका शत हुआ। 1938 में अज्ञेय ने ‘ वशाल भारत’ में उनकी दो इंप्रेशनिस्ट क वताएँ छापीं।

प्रभाकर माचवे द्वारा ल खत, अनूदित, संपादित पुस्तकों की संख्या सवा सौ से अ धक है। ‘स्वप्न भंग’, ‘अनुक्षण’ और ‘ वश्वकर्मा’ उनके प्रमुख काव्य-संग्रह हैं। उन्होंने हिंदी, मराठी और अंग्रेज़ी में समान अ धकार से लखा है। वह बहुभाषा वद् थे। भारत की बहुत सी भाषाएँ समझ और बोल लेते थे। अपने इस भाषाज्ञान का उपयोग उन्होंने हिंदी के प्रचार-प्रसार के लए कया। चत्रकला में भी उनकी रु च थी और उन्होंने इसकी शक्षा ली थी। उन्हें सो वयत लैंड नेहरू पुरस्कार और उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के पुरस्कार से सम्मानित कया गया।

डॉ. प्रभाकर माचवे का काव्य

सन १९३६ में प्रगतिशील लेखक संघ के प्रथम अ धवेशन के साथ ही भारतीय साहित्य में प्रगतिवाद का आगमन माना जाता है । इस समय तक प्रगतिवाद की कोई चर्चा साहित्य में नहीं थी । कन्तु युरो पय साहित्य में ऐसी प्रवृत्तियाँ दिखाई पड़ने लगती थी। जो अपेक्षाकृत काफ़ी नहीं थी। ये प्रवृत्तियाँ उलझी हुई संवेदना एवं भाषा की प्रतिकात्मकता से युक्त थी । अत्या धक अव्यक्त संकेतपरक एवं दुर्बोध संवेदनाओं से युक्त होने के कारण ये प्रवृत्तियाँ साहित्य जगत में औत्सुक्य एवं कुतुहल का वषय बनी। प्रयोगवाद से समानान्तर जो काव्यधारा इस कालखंड में चली आ रही थी वह प्रगतिवाद की थी । वस्तुतः प्रगतिवादियों को ही प्रयोगवादी बनाने का उपक्रम इस काव्यधारा का मौ लक प्रयास था। जब इस काव्यधारा के प्रतिगामी (प्रगति वरोधी) रुप पर मानवीय (मानव सम्बधी) प्रकाश डाला गया एवं उसे छायावाद का ही परिवर्तित रुप निरु पत कया गया तब यह तो संभव नहीं था क प्रयोगवाद के नाम से यह काव्यान्दोंलन अ धक समय तक चल पाता ।

माचवे प्रारंभ से ही प्रगतिवादी साहित्यान्दोलन से प्रेरित एवं प्रभा वत रहे । माचवे के कृतितत्त्व पर प्रगतिवादी व्यान्दोलन का काफी प्रभाव पड़ा । यहाँ तक आते-आते मार्क्सवादी वचारधारा ने साहित्य पर अपना प्रभाव डालना प्रारंभ कर दिया था । मार्क्सवादी वचारधारा ने न केवल हिन्दी साहित्य को, बल्कि वश्वसाहित्य तक को प्रभा वत कया । हिन्दी में प्रगतिवादी क वयों ने तो खूल कर मार्क्सवाद के गीत गाए

। समस्त प्रगतिवादी साहित्य मार्क्सवादी तो नहीं कहा जा सकता, परन्तु वह मार्क्सवादी वचारधारा का पोषक है। प्रभाकर माचवे को शुध्द रुप से मार्क्सवाद से काफी प्रभा वत थे । माचवे मार्क्सवादी तो हैं परन्तु कसानों एवं मजदूरों के हितों के समर्थन तक ही और इस समर्थन के लए वे क्रांती का आवाहन करने से भी नहीं हिचकते । माचवेजी ने सदैव परम्परा से अलग हटकर काव्य सृजन कया । यही कारण है क वह अपनी एक अलग पहचान रखते है । इस अध्याय में माचवे के काव्य का वश्लेषण करने का प्रयास कया गया है । अध्ययन सुलभता हेतु खण्डकाव्य ' वश्वकर्मा' को अलग से वश्ले षत कर उनके अन्य क वता संग्रहों को एकत्रित वश्ले षत कया गया है ।

डॉ. माचवे के काव्य का रचना- युग :

डॉ. प्रभाकर माचवे के काव्य रचना का युग अत्यंत वस्तुत था । वह शताब्दी के चौथे दशक के प्रारं भक वर्षो से लेकर नवम् दशक के प्रारं भक वर्षों तक फैला हुआ है । और लगभग आधी शताब्दी (पचास वर्ष) के प्रदिर्घ काल खंड को अपने आप मे समेटे हुए है । उनके दूसरे काव्यसंग्रह 'अनुक्षण को देखने से ज्ञात होता है क इस संग्रह में क व की सन १९३३ से १९५६ तक की चुनी हुई ६५ रचनाएँ संग्रहीत की गई है । इस संग्रह में संक लत एवं १९३३ में ल खत प्रथम रचना 'द्रुत - वलम्बित' को देखकर ऐसा लगता है क शायद माचवेजी ने पहले संस्कृत में क वताएँ लखी हों ।

इस कालखंड में हिंदी क वता और साहित्य ने अनेक उतार-चढाव देखे है । यह वह समय था जब छायावादी क वता अपने वकास के उतार बिंदू पर थी । छायावाद के वरुध्द जो प्रति क्रया प्रारंभ हुई उसका पहला रुप तो हमें छायावादी क वयों की रचनाओं में ही मल जाता है । इस समय तक आते-आते प्रसाद का काव्य लोक-जीवन देह सम्बन्धित वेदना और व्यथा का वह मा र्मक अंकन करता है जो मानवता का पथ प्रशस्त करता है । 'लहर' एवं 'कामायनी' में भी समता पर आधारित इसी मानवतावाद की प्रतिष्ठा की गई है।

माचवे के काव्य में प्रारंभ से ही मानव व शष्टता के लए आग्रह रहा है । वे बहुजन प्रतिष्ठा के लए कटिबध्द हुए थे, कंतु उनकी कटिबध्दता का कारण वराट मानवीय करुणा ही थी। माचवे ने यथार्थ की नवीन भू मयो को अपने काव्य में उपस्थित कया जो युग चेतना के संदर्भ में आधुनिक परिवेश लाकर उपस्थित हुए थे । उनके ही काव्य द्वारा प्रयोग के प्रत्येक स्तरपर न वन शल्प, वषयवस्तु, भावचेतना और नवीन परिवेश के निर्माण का प्रयत्न आरंभ कर दिया । उन्होंने यथार्थ के स्तर पर तथा क थत प्रगतिवाद से मुक्ति की सांस ली एवं सम्प्रदाय प्रेरित कल्पित यथार्थ के स्थान पर आत्मचेतना से नि र्मत अनुभूति प्रधान यथार्थ की प्रतिष्ठा की और यह सब कया गया मानव व शष्टता के स्तर पर, ववेक के धरातल पर ।

© **Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

सन १९४८ के बाद माचवे के काव्य में एक परिवर्तन आया तथा उन्होंने प्रगतिवाद के राजनीतिक दुराग्रह से अपने को पृथक करने का प्रयत्न कया । इससे उनके काव्य में वदयमान प्रगतिवादी चेतना का एक नवीन रंग रुप व्यक्त हुआ। माचवे का प्रगतिवाद आत्मसंभव है; संस्कारी है, परम्परागत है, वह जीवन व्यापी साधना का फल है। उनकी आत्मा का दर्शन है, मन प्राण का आवेश है । सन १९५६ पहुँचते-पहुँचते उनमें च ान की कठोरता का अ वर्भाव होता दिखाई देता है। यह अस्तित्ववाद का प्रभाव था । अस्तित्ववाद, प्रभाव, अनास्था, निराशा, कुंठा, मृत्यु और संत्रास आदि भावनाओं की पुष्टि करता है ।

वस्तुतः माचवे के काव्य में परम्परा और प्रगति, वरोधी तत्त्वों के रूप में उपस्थित नहीं होते वरन् परस्पर पूरक तत्त्वों के रूप में ही उनका वकास हुआ है। उन्होंने सभी से प्रभाव ग्रहण कया । यह नहीं क सार्थ कामु, कश्के गार्ड, हेडगर नीत्से मार्क्स, एंजिल आदि अपना प्रभाव डालते हैं वरन उनके मानवतावाद पर ज्ञानोबा, तुकाराम, रवीन्द्र, तुलसी और कबीर भी अपनी पूरी छाप छोड़ते हैं ।

सर्वप्रथम उनकी रचनाएँ 'प्रथम तारसप्तक' में संग्रहीत हुई । त प इसके पूर्व तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं में वे काफी पहले से प्रका शत होती आ रही थी । माचवे जी के तीन क वता संग्रह तथा एक खण्डकाव्य प्रका शत हुआ ।

1) स्वप्नभंग - १९५७
2) अनु-क्षण- १९५९
3) मेपल . १९६७
4) वश्वकर्मा (खण्डकाव्य) - १९८८

इसके अतिरिक्त उनकी क वताएँ निम्न दो संग्रहों में भी संग्रहीत हुई है ।

1) प्रथम तारसप्तक - १९४३
2) तेल की पको ड़याँ - १९६२

'प्रथम तारसप्तक' में तो उनकी क वताएँ अन्य प्रयोगवादी क वयों के साथ संक लत है, कन्तु 'तेल की पकौ डयाँ' उन्हीं का व्यक्तिगत संकलन है । इसका पहला भाग पदय है, और दूसरा भाग गदय । पूस्तक में प्रथम भाग पदय को 'प्याजी पकौ डयाँ' शीर्षक के अंतर्गत संग्रहित कया गया है। कालक्रम की दृष्टि से 'तारसप्तक' का स्थान सर्वोपरी है । 'तारसप्तक' प्रथम संग्रह है जिसमें माचवे की २८ रचनाएँ संक लत हैं । 'तारसप्तक' में माचवे का प्रगतिवादी रुप पूरी तरह मुखरित है ।

क वता और पाठक के बीच वे सीधा भाव- वनिमय चाहते थे । अपनी भू मका में वे कहते हैं, "अपनी क वताओं के वषय में मौन रह कर जब क वतामात्र पर, क वता नामक जातिबोधक संज्ञा पर (भाववाचक संज्ञा पर नही ; क्यों क अं धकाश भाववाचक शब्द अभावसूचक ही होते है।) मुखर होने का वचार करता हूँ; तब काव्यरचना के आदि - कारण और अन्तिम - हेतू के सम्बन्ध में भी कोई सर्वसामान्य नियम बनाना मुझे तर्कसंगत नहीं जान पडता । कला की अपनी स्वयनि र्णत तर्क पद्धति होती है। इस लए रचना की प्र क्रया पर ही कुछ ११ कहा जा सकता है; वस्तू - वषय, व्यंजना आदि पर। " " वह क वता और पाठक के बीच व्यक्ति क व को लाना अबा धत और अप्रस्तुत समझते है । माचवे के काव्य के वषय अनेक रहे हैं । यह वषय उनकी अलग- अलग क वताओं में बिखरे पड़े है । एक ही वषय को अनेक क वताओं में अलग- अलग तरह से अ भव्यक्त कया गया है ।

जीवन दर्शन तथा मानवतावाद :

माचवेजी मानवता के क व है । मानवतावाद की चर्चा करते हुए आ . नन्ददुलारे बाजपेयी ने कहा है । "मानवतावादी लेखक अपनी अपार सहानुभूति से पदद लत मानव की वशेष निहित शक्तियों और संभावनाओं का आलेख करता है । " २

माचवे एक जनवादी क व हैं। मनुष्य ही उनके काव्य का केन्द्र बिन्दू है । वे मनुष्य को समस्त बाधाओं से मुक्त करने के लए प्रयत्नशील दिखाई देते हैं। वह व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और समस्त मनुष्य की उन्नति से प्रेरित है । 'मुक्ति - दिवस' (अनु-क्षण) शीर्षक क वता में क व ने स्पष्ट कया है क देश के स्वतंन्त्र होने पर भी सभी लोगों को कहा मुक्ति मली है? केवल कुछ मु ी भर लोगों को मुक्ति मली है। क व की दृष्टि में इस मुक्ति का कोई महत्त्व नहीं है; वह तो उस मुक्ति का आकांक्षी हैं, जब प्रत्येक प्राणी को स्वतन्त्रता मलेगी ।

"मुक्ति तभी जब हो वचार भी मुक्त, मुक्ति हो वाणी की,

मुक्ति दिवस हम तभी मनायें मले मुक्ति हर प्राणी की । " ३

वजया-दशमी' (अनु-क्षण) के दुसरे सानेट में भी क व काली माँ से धैर्य की मांग करता हुआ भारत माँ की रक्षा का प्रण करता है

" पर आज करें हम प्रण-काली माँ ! दो हमकों बल औ' धीरज

मुझको प्यारा है एक धर्म - भारत माँ की धरती का रज ।

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

'झंझा और वृक्ष' (अनु-क्षण) में क व कसान-मजदूर, हरिजन आदि सभी की उन्नति की कामना करता हुआ राष्ट्र को एक वृक्ष की उपमा देता है । जिस प्रकार वृक्ष की अनेक शाखाएँ होती है परन्तु उनका पोषण एक तना ही करता है, उसी प्रकार इस राष्ट्र में भी अनेक राज्य होते है; परन्तु वे अनेक होते हुए भी एक ही राष्ट्र द्वारा संचा लत-परिच लत होते हैं ।

"राष्ट्र वृक्ष सा जिस पर बसते नाना स्वर के पांखी

यहां न कोई नियम क सबका एक रंग या मत हो ।५

महात्मा गाँधी ने मनुष्य के लए सर्वप्रथम राजनीतिक मुक्ति को आवश्यक माना और उस मुक्ति के लए एक ऐसा मानवतावादी अस्त्र अपनाया जो अंहिसा के नाम से आज वश्व भर में वख्यात है । परन्तु क व राजनीतिक मुक्ति के साथ ही आ थर्क और सामाजिक स्वतन्त्रता भी चाहता है। अपनी इसी मुक्ति की कामना को 'मुक्ति देवता! प्रणाम!!' इस गीतिनाटय में क व कुछ इस प्रकार अ भव्यक्त करता हैं।

" मुक्ति देवता प्रणाम ।

हे अपूर्ण, पूर्ण काम

जन-जन का सुख निधान

समता श्रत सं वधान

सबको हो भू मदान

पहुँचे आदर्श धाम

मुक्ति देवता प्रणाम

सब को आवास, अन्न

सब को हो वस्त्र, धान्य

सब हों ह र्षत प्रसन्न

सब को अब मले काम

मुक्ति देवता प्रणाम ।

© **Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

माचवे की सच्ची मानवतावादी दृष्टि का परिचय वहाँ मलता है जहाँ । वे देश एवं राष्ट्र की सीमा से बाहर निकल कर समस्त मनुष्य जाति के हित की कामना से प्रेरित हैं । वैज्ञानिक आ वष्कारों के कारण यह कार्य और भी सरल हो गया है । माचवेजी कई देशों का भ्रमण कर चुके थे अतः उनकी मानवतावादी दृष्टि एक वस्तृत फलक ग्रहण कर लेती है। वज्ञान के अन्यान्य अ वष्कारों ने जहाँ हमारे जीवन को सु वधापरक बना दिया है, वहाँ वे मनुष्य को भी एक यन्त्र बना रहे हैं । मनुष्य मनुष्यता से शून्य होकर पशु के स्तर से भी नीचे जा रहा है। 'काज़ीरंगा' (तेल की पकौ ड़याँ) क वता में क व ने मनुष्य के इसी जंगलीपन की ओर संकेत कया है। मनुष्य की हृदयहीनता को देखकर शायद पशुजगत को यह प्रश्न सता रहा है-

"कौन यहाँ जँगली है ?" हम जो सहस्त्रकों के लए जिलाते

या क आप जो अणु बमकी निर्माण- दौडमें हो मदमाते

यहाँ शकार मना है, वर्ना हिंसक मानव से कब बचते ?

गोली नहीं जानती भाषा, वर्ण; जाति के भेदक रिश्ते । ७

आज मानवता के लए अणुशस्त्र के परीक्षणों ने सबसे भयानक संकट उपस्थित कर दिया है । इन अणुशस्त्र परीक्षणों के मूल में पछली शताब्दियों में जन्मा उपनिवेशवाद का सपना है, जो आज भी मनुष्यता को भयभीत कये हुए है । 'सौ का मार्च' (मेपल) शीर्षक क वता में माचवे कहते है-

कसी देश के कसी रंग के कसी वेश के

ओ वैज्ञानिक, राजनिती वद्, सपने लेते उपनिवेश के

अणु के अस्त्र परीक्षण रोको

मत दुनिया को प्रतिहिंसा की

इस भ ी में झोंको

रोको, रोको,

अणुकेअस्त्र - परीक्षण रोको !"

© **Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

निष्कर्ष

डॉ. प्रभाकर माचवे अहिंदी भाषी मूर्धन्य साहित्यकार और बहुत बड़े स मक्षक भी हैं। हिंदी साहित्य में उनका बहुत बडा योगदान हैं। उनकी एक अलग पहचान हैं। डॉ. प्रभाकर माचवे की सबसे पहली वशेषता हिंदी साहित्य में लघु उपन्यासों का चलन है । और लघु उपन्यास में उन्होंने ऐसे वषयों को उठाया है, जिनकी चर्चा कम ही हुई है। इसी तरह उनकी काव्य वधाओं में भी वषयों की व वधता देखने में आती हैं। क वता, उपन्यास, निबंध, एकां कयों में उन्होंने साम्प्रदायिक समस्या, अछूतों के मान सक वकास का प्रश्न, मार्क्सवाद, वदेशी पूँजी से पलनेवाले स्वदेशी पूँजीवादी, अंधश्रद्धा, नारी समस्या, राज कय और सामाजिक समस्याओं के साथ-साथ धा र्मक तथा आ र्थक समस्याओं को भी चत्रित कया है। पारंपारिक वधाओं के साथ-साथ उन्होंने आधुनिक वधाओं पर भी अपना ध्यान केंन्द्रित कया है। दर्शन, बाल साहित्य, यात्रा वर्णन जैसी आधुनिक वधाओं पर भी उन्होंने अपनी अ मट छाप छोड़ी है। उन्होंने युग की प्रत्येक सामाजिक, धा र्मक, आ र्थक एवं राजनीतिक समस्याओं को गहराई से अनुभव कर रचनाओं में रूपायित कया । धा र्मक अन्ध वश्वासों और सामाजिक कुरीतियों का खुलकर खंडन कया वे नारी को जीवन के हर क्षेत्र में आगे लान चाहते थे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अधूरे साक्षात्कार ने मचन्द्र जैन अक्षर प्रकाशन, दिल्ली । प्रकाशन वर्ष १९९६
2. अज्ञेय और समकालीन काव्य नरेन्द्र देव वर्मा रचना प्रकाशन, सराय, खुल्दाबाद इलाहाबाद । प्रकाशन वर्ष १९७९
3. आठवे दशक की क वता डॉ. नामदेवकर अतुल प्रकाशन १०६ / में सामाजिक बोध उतकर 'नान्देडी' २९५ ब्रह्मनगर कानपुर प्रकाशन वर्ष १९८९
4. आधुनिक कथा-साहित्य और चरित्र वकास डॉ. बेचन सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली प्रकाशन वर्ष १९६५
5. आधुनिक हिंदी उपन्यास भीष्म सहानी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली । प्रकाशन वर्ष १९९०
6. आधुनिक हिन्दी काव्य में व्यंग्य बरसानेलाल चतुर्वेदी, प्रभात प्रकाशन. दिल्ली। प्रकाशन वर्ष १९७३
7. उपन्यास के शल्प डॉ. गुलाबराय बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी पटना, प्रकाशन वर्ष १९७३
8. उपन्यास सद्धांत और समीक्षा डॉ. मक्खनलाल शर्मा प्रभात प्रकाशन मथुरा प्रकाशन वर्ष १९६५

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.